International Journal of Information Movement Vol.4 Issue VI (October 2019)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 6-8

सूचना प्रौद्योगिकी का ग्रन्थालयों में योगदान

Anand Prakash Srivastava
(Guest Lecturer)
(Government Polytechnic Lucknow)

सारांश

वर्तमान ग्रन्थालयों में मोबाइल प्रौद्योगिकी की भूमिका के बारे में बात करें तो यह आलेख, पैसा, सामग्री श्रमशक्ति और उपयोगकर्ताओं के वक्त को बचाने के लिए उपयोगी है।वर्तमन समय सूचना प्रौद्योगिकी के युग के रूप में जाना जताा है। इस युग में आईटी के बढते प्रभाव ने लाइब्रेरी के अर्थऔर कार्य प्रणाली अप्रत्याशित परिवर्तन किया है।

कल तक के ग्रन्थालाय, आज जानकारी के केन्द्र के रूप में काम कर रहा है। आने वाले वक्त में ये ग्रन्थालय सूचना को सचमुच हमारे हाथों तक ले आयेगे। जिसका आज मात्र विचार कर रहे है। आईटी की सहायता से बहुत बडी मात्रा में जानकारी को अग्रसर, संक्षपित और सही और जल्दी से प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके अलावा इसका उपयोग करते हुए सही जानकारी मिल सकती है।

1.0 प्रस्तावना

सूचना के युग में ग्रन्थालय की भूमिका को भी गलत नहीं आका जा सकता। इस समय में सूचना प्रौद्योगिकी के युग के नाम से जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षो। से शीघ्र रूप से विकास हुआ है। सूचना प्रौद्योगिकी के अन्तर्गत कम्प्यूटर के साथ माइक्रो इलेक्ट्रानिक्त और संचार प्रौद्योगिकी भी मिश्रित है। इसके विकास का नवीनतम रूप, मोबाइल, टेलीफोन, रेडियो, इंटरनेट, टेलीविजन, उपग्रह प्रसारण आदि के रूप में मिलता है। लेकिन जब से साहित्य प्रकाशन में तीव्रता आई है। उसे संग्रहित एवं पुनः प्रसारण तीव्रता आई उस संग्रहित एवं पुनः प्रसारण में कठिनाईयों का आसामना करना पडा। कल के ग्रंथालय आज सूचना केन्द्र के रूप में जाने जाते है। कल ग्रन्थालय अपकी उंगलियों पर आज की विचारधारा को प्रस्तुत करेंगे, विस्तार में यह कहना उचित होगा की सूचना क्रांति के फल स्वरूप ग्रन्थालय विज्ञान के सोत्रों में भी परिवर्तन हो गया है।

कल–1–ग्रन्थालय एक संवर्धनशील संस्था है।

2–पुस्तकें उपयोग के लिए है।

3–पाठक का समय बचाओ।

4–प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिले।

5–प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिले।

आज–1–सूचना परिवर्तन है।

2–सूचना प्रलेख उपयोग के लिए है।

3–पाठकों का समय बचाओं।

4–प्रत्येक पाठक को उसकी सूचना मिले।

कल–1–पाठक सूचना क प्रयोग करने के लिए स्वतंत्र रहे।

2–सूचना उत्पाद उपयोग के लिए होता है।

3–प्रत्येक सूचना प्रयोगकर्ता को मिले।

4–सूचना परिवर्तनशील होती है।

5–प्रयोगकर्ता का समय बचाओ।

2.0 सूचना प्रौद्योगिकी की आवश्यकता–साहित्य के कारण उपयोगकर्ता को अपनी आवश्कता की सूचना सामग्री वक्त पर मिल रही। इसमें आने वाली बाधाओं के निवारण हेतु सूचना प्रौद्योगिकी की आवश्कता मापी गई है।

सूचना प्रौद्योगिकी दूर संचार में समायोजन की तकनीक है जो नई प्रणालियों के विस्तार सूचना के संग्रहण और सूचना पुनः प्राप्ति में सहयोग देती है।

सूचना तकनीकी की मदद से कम समय में ज्यादा से ज्यादा सही सूचना का स्थानान्तरण रिकार्डिंग, प्रसारण किया जा रहा है।

वर्तमान समय में इलेक्ट्रानिक, प्रसारण किया जा रहा है। ग्रन्थालयों में सूचना प्रौद्यागिकी की आश्यकता कई कारणों से है।

1– सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से ग्रन्थालयों में किये जाने वाले कार्य जेसे सूचीकरण, वर्गीकरण, भौतिक उत्पादन, पुस्तक आदि।

2– सूचना में तीव्र गति से वृद्धि होने के कारण

3– मशीन पठनीय रिकार्डस को बहुपयोगी बनाने के लिए।

3.0 पुस्तकालय में मोबाइल सूचना तथा संचार तकनीकी का उपयोग–

इस मोबाइल जनसंचार तकनीकी में काफी उन्नतिशील परिवर्तन होते है।

जिसके कारण मोबाइल फोन टैबलेट, आई पोड्स, पी0डी0ए0 का प्रचलन बढ रहा है। इन मोबाइल फोनों में नेट वीडियों कालिंग, 3 जी फोर जी तथा वाई फाई कनैक्टिविटी एवं ब्ल्यूटूथ आदि की सुविधांए है। उचित शब्दों में कहना उचित होगा कि संसार के साधन चलते–फिरते कम्प्यूटर है। अब लोगों का झुकाव कम्प्यूटर की बजाए इनकी तरफ अधिक बढ रहा है।

इन यंत्रों पर डाटा का संग्रह और उसका बहु उपयोगी नियंत्रण करना ज्यादा सहज है। ग्रन्थालय मोबाइल टैक्नोलाजी की मदद से अपने उपयोगकर्ताओं की निम्नलिखित रूप से लाभान्वित कर सकते है।

1– संदर्भ सेवा प्रभावपूर्ण ढंग से प्रदान करने के लिए मेल आदि की मदद का प्रयोग इन सब को प्रयोग में लाने के लिए इन्टरनेट पर कुछ निम्न वैब साइट है जिनको उपयोग में लाया जा सकता है।

2– संक्षिप्त संदेश प्रत्यक्षतः सम्पर्क में रख सकते है। वक्त–वक्त पर प्रयोगी सूचनांए कर सकते है।

3– इलेक्ट्रानिक लेखों की खोज व प्राप्ति की सूचना शीघ्र प्रस्तुत करने अैर प्रयोगकर्ताओं द्वारा प्रतिक्रिया की आसानी से प्राप्ति हेतु

i) **WWW.Mobdis.com/**

ii) **http://appery.10/**

iii) **www.wix.com/**

iv) **http://sites.googles.com/phe=em**

4.0 सुक्षाव–ग्रन्थालयो में बढते सूचना प्रौधोगिकी के प्रयोग और उपयोगकर्ताओं को केवल सुविधा सम्पन्न नगरों तक सीमित न रखा जाए अपितु इसे भारतीय गांवों तथा ऐसे क्षेत्रों में पहुंचाया जाए। जहां अभी तक बिजली व्यवस्था का आभाव है। गांवों का विकास भारत का सच्चा विकास है।

5.0 लाभ–

1– ग्रन्थालय और प्रयोगकर्ताओं के बीच सीधा सम्बन्ध होना चाहिये।

2– ग्रन्थालय के इलेक्ट्रानिक साधनों की सहज उपयोगिता एवं प्रयोग।

3– वसुधैव कुटुम्बकम की संकल्पना साकार हो।

4– एक साथा कई प्रयोक्ता अपनी वांछित जानकारी प्राप्त कर सके।

5– वक्त की बचत, धन एवं श्रम की सही बचत।

6.0 समाधान–

1– गोपनीयता तथा सुरक्षा के उपायों पर भी ध्यान देना उचित होगा क्योंकि गोपनीयता तथा सुरक्षा भंग न हो सके।

2– इंटरनेट की गति व्यवधान उत्पन्न करेगी अतः गति ाके अधिक करने पर ध्यान देना प्रशिक्षण के आभाव पाठक में जागरूकता का आभाव होगा तथा इसके कारण वे समुचित प्रयोग कर पाने में असमर्थ होंगे।

3– इन्टरनेट की गति व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

7.0 निष्कर्ष–ग्रन्थालयों में सूचना प्रौद्योगिकी का बढ रहा उपयोगी इसकी उपयोगिता से न केवल नगरों (गांवो) का विकास बल्कि यह समस्त राष्ट्र के लिए चरितार्थ करता है।

8.0 सन्दर्भ–

1. **Saxena, AS Yadav, R. (2013) Impact Mobil Technology on libraries. A Descriptive study Internation journal of digital library service. P..-13**

2. **The Hindu (2013 August 24) The Hindu sited. april 4, 204 from the hindu:htpp://Thehindu.com/sci-tech/techonology:/internaet India is now word-largest-internet user after use-china/article.5053115. ece. Barile lore moble technology for libraries list of moble application and resources for development college of reserearch Libraries news. vol. 72, No. 4.222-228P.M.**